ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-3 अंक : 36

सहयोग शुल्क : रु. 1 / दिसंबर : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

भारत के दिव्यांग आगे बढ़कर विकास कर रहे है, यह बात मुझे आनंदित करती है।

– प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

भारत के दिव्यांगों को माननीय प्रधानमंत्री ने नई चेतना और नई दिशा दी है।

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

भारत का हर दिव्यांग आगे बढ़ रहा है ये गौरव की बात है।

– कलराज मिश्रा (राज्यपाल, राजस्थान)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

कुछ हटके करो, खुद को बदलो। खुद को बदलना मुश्किल जरूर है, नामुमकिन नहीं। हर व्यक्ति में कुछ खामी और कुछ खासियत होती है।

बस हमें ये खामी और खासियत के बीच का फ़ासला ही तय करना होता है। ऐसे दिव्यांग लोगों को मैंने देखा है जो अपनी खामी की बावजूद नई खासियत पे ध्यान देते है। ऐसे ही लोग समाज में अपना उदाहारण भी कायम करते है। जीने के लिए जरुरी है तो सिर्फ वो है - जीने का ज़ज़्बा, संघर्ष की तैयारी और आगे बढ़ने का हौसला। कहते है की -

जो अपनी राह से भटकते है,
वो अपना सफर मुश्किल बनाते है।
जो अपनी ज़िद पे अड़ते है,
वो अपने सफर में मंझिल को पाते है।

दिव्यांग लोगों की वेदना को और उनके परिश्रम को जानना आम आदमी के लिए जरुरी होता है। जो समाज में रहते है मगर क्यों उपेक्षित है ? तुम देखना की गरीब से गरीब व्यक्ति की झोपड़ी में भी एक दरवाजा जरूर होता है। ये दरवाजा ही अपनी मंझिल तक जाता है। दुःखी होकर घर में रहने से बेहतर है घर से निकलना। दिव्यांग लोगों को मैंने घर से निकलकर संघर्ष करते हुए देखा है। हम इन दिव्यांगजनों और समाज के बीच एक माध्यम बनना चाहते है। आप से निवेदन है की हमारी यह छोटी सी मुहीम में आप भी हिस्सा बने और समाज के प्रति अपना ऋण अदा करें।

इस पत्रिका के बारे में आपके प्रतिभाव हमें भेजें। हम आपके द्वारा दिए जाने वाले सुझाव या विचार पत्रिका में प्रकाशित करेंगे।

पाठकों से हम यह अपेक्षा करते है की 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनों के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम व कोई दिव्यांगजन के विशेष प्रदान का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

दिसंबर : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 3 अंक : 36

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

राजस्थान के माननीय राजयपाल महोदय को भेजी गई 'दिव्यांग सेतु' की प्रत के प्रतिभाव में मिले ईस खत से हमे प्रोत्साहन मीला है।

सहसंपादक - मिहीरभाई शाह

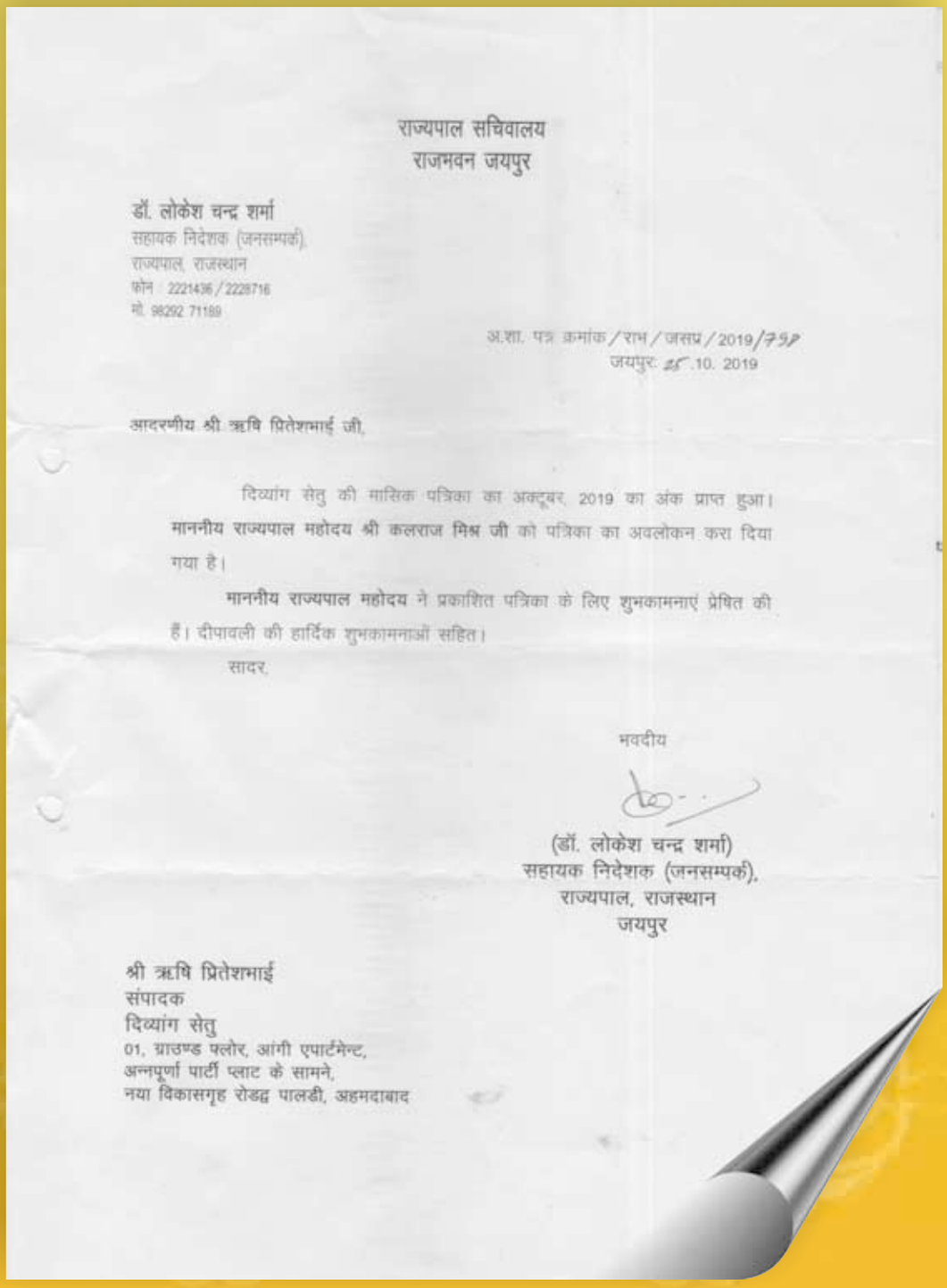

राज्यपाल सचिवालय
राजभवन जयपुर

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा
सहायक निदेशक (जनसम्पर्क),
राज्यपाल, राजस्थान
फोन : 2221436 / 2228716
मो. 98292 71199

अ.शा. पत्र क्रमांक / राभ / जसप्र / 2019 / 792
जयपुर: 25.10. 2019

आदरणीय श्री ऋषि प्रितेशभाई जी,

दिव्यांग सेतु की मासिक पत्रिका का अक्टूबर, 2019 का अंक प्राप्त हुआ। **माननीय राज्यपाल महोदय श्री कलराज मिश्र जी** को पत्रिका का अवलोकन करा दिया गया है।

माननीय राज्यपाल महोदय ने प्रकाशित पत्रिका के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

सादर,

भवदीय

(डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा)
सहायक निदेशक (जनसम्पर्क),
राज्यपाल, राजस्थान
जयपुर

श्री ऋषि प्रितेशभाई
संपादक
दिव्यांग सेतु
01, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,
नया विकासगृह रोडद्व पालडी, अहमदाबाद

दि. २४ अक्टूबर को दीपावली सेलिब्रेशन का आयोजन

दीपावली मतलब हर्ष और उल्लास का त्यौहार। नए साल का स्वागत और पुराने साल को विदा करने के लिए, पटाखें फोड़ना-मिठाई खाना-तोहफ़ा देना-सेज संबंधी को मिलना-घूमना ऐसे कार्य में शाला का वेकेशन कब ख़त्म हो जाता है वो बच्चों को मालूम ही नहीं पड़ता। यही सोच लिए मेमनगर स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फॉर मेन्टली चेलेंज्ड द्वारा दिनांक २४ अक्टूबर, बृहस्पतिवार को दीपावली सेलिब्रेशन का आयोजन किया।

सोला रोड स्थित बहुचर माता के मंदिर में संस्था के करीब १०० मनो दिव्यांग बच्चों को ले जाया गया। सब बच्चें लाल रंग के वस्त्र पहनकर आये हुए थे। सब बच्चों को एक पंक्ति में बिठा कर सिर्फ फुलझड़ी जलाकर दीवाली मनाई गई बाद में सब को वर्तुलाकार बिठाकर शिक्षकों द्वारा बीचमें फाउन्टन, चककर और रंगीन फुलझड़ी को जलाया गया। पटाख़े के आवाज़ से बच्चो ने भी वातावरण को उन्मादित बना दिया।

पटाख़े फोड़ने के बाद सब बच्चों को दीवाली गिफ्ट और वॉकेशनल ग्रुप के बच्चों को बोनस दिया गया। बाद में लाइव डोसा-ऊतप्पम का भोजन करवाया गया।

इस कार्यक्रम में लायन्स क्लब संवेदना और लायन्स क्लब शाहीबाग के सदस्य भी जुड़े। उनके द्वारा दीवाली गिफ्ट स्पॉन्सर की गई थी। तीन महीने पहले से संस्था के वोकेशनल ग्रुप के बच्चें विभिन्न प्रकार के दीपक बनाते हैं। इस दीपक की बिक्री से हुए मुनाफे से, संगठन बच्चों को बोनस देता है, इस प्रकार दिवाली सेलिब्रेशन होता है और बच्चों के वेकेशन को मज़ेदार बना देती है।

नीलेश पंचाल
संचालक- नवजीवन ट्रस्ट

भूतपूर्व वडाप्रधान जवाहरलाल नहेरु की जन्म जयंती

१४ नवम्बर यानी भूतपूर्व वडाप्रधान जवाहरलाल नहेरु की जन्म जयंती, जो 'बाल-दिन' के रूप में मनाया जाता है । स्मित चाइल्ड एज्युकेशन डेवलोपमेन्ट ट्रस्ट ने इस अवसर पर दिव्यांग बच्चों के लिए इनडोर खेल का आयोजन किया गया था । इसके अंतर्गत बच्चों ने नींबू -चम्मच, संगीत- कुर्सी और रिंग-पास जैसे इनडोर खेल खेले। खेल में अग्रेसर रहने वाले बच्चों को प्रोत्साहन के रूप में इनाम दिया गया और सब बच्चो को तोहफ़ा भी दिया गया। इसतरह दिव्यांग बच्चों ने आनंदपूर्वक बाल-दिन मनाया।

दिव्यांग अभिनेता परेश भानुशाली

वलसाड स्थित परेश भानुशाली जन्म से दिव्यांग है। जिसके दोनों हाथ का कंधे से आगे विकास ही नहीं हुआ । उस वजह से बचपन में प्रथम क्लास में भी एडमिशन नहीं मिला था। दूसरे प्रयास में स्कूल द्वारा लिखित में यह गारंटी मांगी गई की अगर परेश को कुछ होता है तो स्कूल की कोई जिम्मेवारी नहीं रहेगी। परेश ने नॉर्मल स्कूल में एडमिशन लिया तो उसकी दिव्यांगता पर सब हँसते थे।

परेश को सायन्स में दिलचश्पी थी मगर १० वीं में ७२ प्रतिशत होने के बावजूद, वो शारिरीक अभ्यास नहीं कर सकेगा यह कहकर ११वीं में सायन्स सब्जेक्ट में एडमिशन नहीं दिया। तो परेश को दूसरी स्कूल में एडमिशन लेना पड़ा।

परेश को समाज की तरफ से नकारात्मकता ही मिली परन्तु यह बात को उसने सकारात्मक समज ले कर आगे बढ़ना उचित माना। परेश के दो हाथ सक्षम नहीं थे तो भी हार नहीं मानी, उसने साईकिल और बाइक चलाना भी सीख लिया। बाद में क्रिकेट और कबड्डी के खेल में भी हिस्सा लिया।

इन सब बातों से जुज़कर परेश आगे बढ़ा और आज फार्मसी की स्टडी ख़त्म करके खुद का मेडिकल स्टोर चला रहा है। परेश के बड़े भाई कांतिभाई भानुशाली ने बताया की परेश को सफ़लता हांसिल करने में काफ़ी दिक्कत आई मगर एक साधारण इन्सानकी तरह उसने कार्य किया और जीवन में सफल भी रहा।

अपने जैसे कई दिव्यांग लोगों के जीवन के साथ जुड़ी हुई बातों को अन्य लोगों तक पहुँचाने के लिए उसने 'सायफर शून्य से शिखर तक' नाम से (बायोपिक) हिंदी फिल्म भी बनाई। इस फिल्म में लीड एक्टर के रोल में परेश ने ही अभिनय कीया है। और अभिनय करने के लिए ६ महीने विशेष की ट्रेनिंग भी उसने दिल्ही में ली।

परेश भानुशाली

भारत की अंतरराष्ट्रीय पैरा एथलीट

अक्सर लोग अपनी शारीरिक अक्षमता का रोना रोते हैं। यहां तक की जो लोग स्वस्थ हैं वो भी अपनी असफलता का दोष किस्मत को ही देते हैं। ऐसे लोगों को मलाथी से सबक लेनी चाहिए। पूरा शरीर लकवाग्रस्त होने के बावजूद भी इन्होंने अपनी किस्मत को कभी दोष नहीं दिया और न ही कभी हार मानी। अपने मेहनत के दम पर इन्होंने अपनी सफलता की कहानी गढ़ी है। आज ये भारत की जानी-मानी एथलीट हैं।

दिक्कतें थी मगर मजबूत इरादों वाली मलाथी ने हार नहीं मानी और खेलों को ही अपने दर्द की दवा बना लिया। आज वो भारत की प्रेरणादायक खिलाड़ियों में से एक हैं।

मलाथी कृष्णमूर्ति होल्ला भारत की इंटरनेशनल पैरा एथलीट हैं। इनकी उपलब्धियों की वजह से उन्हें अर्जुन और पद्मश्री सम्मान भी मिल चुका है। उनका जन्म 6 जुलाई 1958 को बंगलौर में हुआ। उनके पिता एक छोटा सा होटल चलाते थे और उनकी मां घर पर रहकर अपने 4 बच्चों की देखभाल करती थीं।

जब वो 14 महीनों की थीं तो उन्हें तेज बुखार हुआ। जब तक उनके परिवार वाले कुछ समझ पाते, उनके पूरे शरीर को लकवा मार गया। लगातार 2 साल तक बिजली के झटके देकर उनका इलाज करने पर उनके ऊपरी हिस्से में तो इसका प्रभाव पड़ा, लेकिन कमर से नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त ही रह गया।

शारीरिक दिक्कतों को चलते हुए मलाथी अपने बचपन का कोई आनंद ना उठा सकी। बच्चों को खेलते हुए देख कर वो निराश हो जाती थी। कुछ लोग जब मलाथी को 'बेचारी' बोलते थे तो उसके माता-पिता को बहुत दुःख होता था। उन्होंने अपनी पुत्री को आत्मनिर्भर बनाने का कदम उठाया। किसीने उन्हें चेन्नई स्थित एक ओर्थोपेडिक सेंटर ले जाने का सुझाव दिया जहाँ दिव्यांग बच्चों को मुफ्त में शिक्षण दिया जाता है और वहां इलाज़ भी किया जाता है।

मलाथी को उसके पिता ने वहां एडमिट करवा दिया। परिवार से अलग रखने का सब को दुःख हुआ मगर कोई और विकल्प भी नहीं था। मलाथी को उसके पिताजी ने ये समजाया था की यहाँ रहने से तेरी जिंदगी बदल सकती है।

मलाथी १५ साल तक चेन्नई में हॉस्टल में रही, और जीवन के सब पहलू को नजदीक से देखा। उसी समयकाल में

दिव्यांग माला कृष्णमूर्ति होल्ला

मलाथी ने स्पोर्ट्स में जाने का फैसला किया। चेन्नई के उस ओर्थोपेडिक सेंटर में मलाथी के पाँव पर काफ़ी बार सर्जरी भी की गई। लेकिन असफ़लता ही हाथ लगी - मलाथी कभी अपने पैरो के ऊपर खड़ी नहीं रह सकेगी ये तय हो गया था।

मलाथी के पिता हंमेशा उसको प्रोत्साहित करते रहते थे। १२वीं के बाद मलाथी ने बेंगलूर में कोलेज में दाखिला पाया मगर क्लासरूम उपरी मंझिल पर होने से दिक्कत थी। मगर कोलेज के प्रिंसिपल ने मलाथी के क्लासरूम को ग्राउंड फ्लोर पे रखा।

यहाँ मलाथीने स्पोर्ट्स के बारे में काफ़ी अभ्यास किया। वहां मलाथी ने शॉटपुट और व्हिलचेर रेस की तालीम ली। उसने स्थानिक और राष्ट्रिय स्पर्धाओं की पेरा ओलिम्पिक में हिस्सा लिया।

अब तक उन्हें करीब 300 मेडल मिल चुके हैं जिसमें अर्जुन और पद्मश्री अवार्ड भी शामिल है। उन्होंने 'साउथ कोरिया, बार्सिलोना, एथेंस और बीजिंग में हुए पैराओलंपिक', 'बीजिंग, बैंकॉक, साउथ कोरिया, कुआला लंपर में हुए एशियन गेम्स' और 'डेनमार्क और ऑस्ट्रेलिया में हुए वर्ल्ड मास्टर्स', 'ओपेन चैंपियनशिप' और 'कॉमनवेल्थ गेम्स' में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया।

१९८१ से मलाथी सिंडिकेट बैंक में मैनेजर के तौर पर काम करती हैं। अपनी परेशानियों से जूझती फिर भी इरादों से मजबूत ये महिला अपने दोस्तों की मदद से 'माथरु फाउंडेशन' भी चलाती है जो अभी 16 शारीरिक रुप से अक्षम बच्चों को आश्रय देता है।

ये भी इनकी एक उपलब्धि ही कही जाएगी कि इनकी याददाश्त भी बहुत अच्छी है ये अपने 6000 बैंक कस्टमर्स का अकाउंट नंबर याद रख सकती हैं।

प्रेरणादायक प्रवचन करती हुई मलाथी कहती है की "शारीरिक दिव्यांगता असल में दिव्यांगता नहीं मगर सब से अहम अपने अंदर पड़ी हुई हीन भावना है। जब तुम खुद को दूसरें से निम्न समजते हो तो मन से दिव्यांग हो जाते हो।"

8 जुलाई 2009 को इन्होंने अपनी पहली जीवनी 'अ डिफरेंट स्पीरिट' लोगों के सामने प्रस्तुत की। जिसमें उन्होंने अपने जीवन के सारे पहलुओं को लोगों के सामने खोलकर रखा है।

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता ज्योति शाह की आत्मकथा।

मेरा नाम ज्योति अमृतलाल शाह है। मेरा जन्म सेलेब्रल पाल्सी (स्पास्टिसीटी) की दिव्यांगता के साथ १९६२ दिसंबर २८ को अहमदाबाद के एक माध्यम वर्ग परिवार में हुआ।

पांच बहन और एक भाई के परिवार में मेरा क्रम दूसरा है। जब स्कूल में दाखिला लेने का वक्त आया तो मेरी दिव्यांगता के कारण कोई स्कूल मुझे एडमिशन देने के लिए तैयार नहीं थे। काफ़ी प्रयास के बाद भी जब सफलता नहीं मिली तब एक स्कूल में दुगनी फ़ीस भरने की शर्त पे मुझे आखिरकार दाखिला मिला। और ऐसे मेरे जीवन में पढाई की सफर शुरू हुई। मेरी १२ साल की उम्र तक मेरी माताजी मुझे गोद में उठा के स्कूल ले जाती थी। उसके बाद काफ़ी ओपरेशन करवाने की वजह से में थोडा चल सकती थी। थोडा चल सकने की स्थति में अपनी बहनों के कंधे के सहारे स्कूल जाने लगी थी।

में जब आठ साल की थी तब मेरे पिताजी को केन्सर हुआ। और केन्सर की वजह से ३ महीनों में ही उनका देहांत हो गया। हमारे परिवार के ऊपर तब मानो की आफत टूट पड़ी थी। मेरी माताजी अनपढ़ थी और पिताजी कोई ऐसी मिल्कत छोड़ के भी नहीं गए थे। कोई बेंक बेलेन्स भी नहीं था तो ऐसे हालात में परिवार की जिम्मेदारी निभाना मेरी माताजी के लिए कठिन हो गया था। हम तीसरी मंझिल पे किराये के घर में रहते थे। टॉयलेट के लिए भी मुझे ग्राउंड फ्लोर पे जाना पड़ता था और पानी की दिक्कत होने के कारण मेरी माताजी तब पानी की बाल्टी ले कर तीसरी मंझिल से निचे आना पड़ता था।

उस कठिन समय में आर्थिक उपार्जन के लिए मेरी माताजीने नमकीन बनाना, गाज-बटन करना एवं भोजन बनाने जैसा कार्य भी किया। न्यू एस एस सी में जब में आई तो मैंने छोटे बच्चों के लिए ट्यूशन क्लास शुरू किया। एक समय ऐसा था की में रोज २५ से ३० बच्चों को घर में पढ़ाती थी। बाद में जब मैंने घर के नजदीक ही कॉमर्स कॉलेज में एडमिशन लिया तो वहां भी मेरा क्लास तीसरी मंझिल पर था ।

वोइस टू दिव्यांग

पढाई के दरम्यान ही मैंने सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू कर दिया था। जब में थर्ड बीकॉम में थी तब गुजरात सरकार के उध्योग विभाग में प्रिन्टिंग एन्ड स्टेशनरी डिपार्टमेन्ट में सरकारी नौकरी मिल गई। इस नौकरी के साथ में बैंकिंग की परीक्षाए देती रही और १९८५ के ऑगस्ट महीने में देना बेंक में क्लर्क के पद पर नौकरी शुरु की। ये नौकरी की पोस्टिंग ढेबरभाई रोड, राजकोट पर थी मगर काफी संघर्ष के बाद अमदावाद की रिलीफ रोड शाखा में बदली हुई थी।

१९८५ से २०११ तक देना बैंक की अलग-अलग ब्रांच में नौकरी की। इस नौकरी दरम्यान मैंने क्रमानुसार ट्राइसिकल, ऑटो ट्राइसिकल और बाद में फॉर व्हीलर, स्कूटर और हेंड ऑपरेटेड कार चलाना सीखा। २०११ में मुझे ऑफिसर का प्रमोशन मिला।

मेरी जीवनयात्रा दरम्यान मेंने मेरे परिवार के प्रति पूरी जवाबदारी से काम किया। छोटे भाई-बहन को पढ़ाया, उनकी शादी की और साथ में सब सामाजिक जिम्मेदारी भी निभाई। २०१० में मेरी माताजी का हार्ट एतेक के कारन देहांत हुआ वो मेरे लिए एक झटका था। मेरे लिए पानी का ग्लास हाजिर करने वाली माताजी की अनुपस्थिति से में अकेली हो गई मगर मैंने हिम्मत नहीं हारी। में आज अकेली ही रहती हूँ। में अब सामाजिक संस्था के साथ में कार्य करती हूँ। मैंने काफी संस्थाओ के साथ मिल के ऐसे कार्य किये है।

जो इस प्रकार है।

१. अंध कल्याण केंद्र, राणीप, अमदावाद
२. अपंग एकता समिति, राणीप, अमदावाद
३. जीवन संध्या घरड़ाघर, अंकुर, अमदावाद
४. डिसेबल एडवोकेसी ग्रुप
५. हैंडीकैप इंटरनेशनल
६. अंधजन मंडल, वस्त्रपुर, अमदावाद
७. अंध कन्या प्रकाशगृह

उसके साथ में इस संस्था में पदभार संभालती हूँ।

१. फाउंडर प्रेसिडेंट - ज्योत फाउण्डेशन
(दिव्यांगों के सर्वांगी विकास के लिए कार्यान्वित संस्था)
२. प्रेसिडेंट - गुजरात व्हीलचेर क्रिकेट टीम
३. वाइस प्रेसिडेंट - इंडियन व्हीलचेर क्रिकेट टीम
४. पास्ट प्रेसिडेंट - लायंस क्लब ऑफ़ अमदावाद परफेक्शन
५. चार्टर प्रेसिडेंट - अलायंस क्लब ऑफ़ अमदावाद एम्पथी
६. नेशनल सेक्रेटरी - दिव्यांग वुमन क्राईम इन्फर्मेशन ब्यूरो
७. कार्यकर्ता सक्षम

मेरी जीवनयात्रा दरम्यान मुझे जो अच्छे-बुरे अनुभव हुए इसके बाद मुझे मेरे दिव्यांग भाई-बहनो को मदद करने का विचार आया। मेरे इस विचार को साथ देने के लिए काफी लोगों ने मुझे सहकार दिया। इसके परिणाम दि. २७/०१/२०१७ को मैंने ज्योत फाउंडेशन के स्थापना की। उसके पश्चात् हमने दिव्यांगों के लिए काफी कार्य किये और अभी ऐसे कार्य हम कर भी रहे है।

गीता चौहान: 28 इंटरव्यू में रिजेक्शन, पोलियो मगर सब के विपरीत व्हीलचेयर बास्केटबाल की एक चैंपियन खिलाड़ी

दिव्यांगता एक समय में अभिशाप के नज़र से देखी जाती थी. मगर अब समय बदल रहा है, शुक्र है कि लोगों के ज़ेहन में बदलाव आ रहा है। ऐसा हो भी क्यों नहीं, गीता चौहान जैसी शख़्शियत जब अपने ज़िन्दगी से एक उदाहरण पेश करती जाएँगी तो ये सोच बदलती रहेगी।

ये हम सभी जानते हैं कि दिव्यांगता अपने आप में एक कठिन चुनौती है, और उस परिस्थिति में समाज और परिवार की अवहेलना आपको और द्रवित कर जाती है। गीता चौहान के साथ भी कुछ ऐसी ही स्थिति थी जहाँ उनसे समाज, रिश्तेदार और परिवार से उस वक़्त वैसा साथ नहीं मिला जिसकी उन्हें उस वक़्त सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। मगर कहते हैं न आग में तप कर ही सोना और निखरता है।

इन सारी उपेक्षाओं और शुरूआती मुश्किलों से लड़कर आज पारा बास्केटबॉल की चैंपियन गीता चौहान (अनु) को काफी अड़चनों से गुज़ारना पड़ा जिसका उन्होनें काफी दिलेरी से सामना किया।

बचपन का संघर्ष :- बचपन में एक बार बीमार पड़ने पर डॉक्टर ने पोलियो का शक मानते हुए उन्हें इंजेक्शन दिया, जिसके बाद से उनके दोनों पैर ने काम करना बंद कर दिया, बड़ी मुश्किल और इलाज के बाद उनके पैर में थोड़ी जान आई जिसके बाद वो बैसाखी के बदौलत चल पा रही थी। यह उस समय की बात है जब उनकी उम्र केवल 6 साल थी।

बजाए इसके कि उनकी मदद की जाये और उनका हौसला बढ़ाया जाए उनके आस पड़ोस रिश्तेदारों ने उनको एक बोझ की तरह देखना शुरू कर दिया। सबसे पहली दिक्क्त आयी उनके पढ़ाई को लेकर जब उन्हें एक म्युनिसिपेलिटी स्कूल में बड़ी मुश्किल से दाखिला मगर वहां भी उनका कोई दोस्त नहीं बन सका। वो अकेली ही रहती थी।

पढ़ाई और नौकरी की मुश्किलें :- कॉलेज के वक़्त भी उन्हें अपने पिता जो कि एक पान दूकान चलाते थे से कोई ज़्यादा सहारा नहीं मिला। मगर उसके लिए इनके मन में कोई मलाल नहीं। हो सकता है उस वक़्त उनके पिता कि कोई मजबूरी रही होगी। बहरहाल गीता चौहान ने अपने दम पर जूनियर कॉलेज में दाखिल लिया और अपना खर्च निकलने के लिए पार्ट टाइम नौकरी भी करने लगीं। इसके पहले 11 वी में जब वो पढ़ाई के साथ काम करना चाहती थी तो 28 बार रिजेक्ट हुई थी। मगर इन सब से बिना हारे उन्होनें बीकॉम और एमकॉम की पढ़ाई पूरी की।

हम और आप होते तो न जाने क्या करते। मगर गीता थी की डटी रही अपनी ज़िद्द पर और अंत में मार्केटिंग की जॉब अपनी क़ाबलियत की बुते पर हासिल की।

लगा की ज़िन्दगी अब पटरी पर आ रही है। इसी बीच गीता की दोस्ती अपने कॉलेज के दोस्त सुजीत से अच्छी हो गयी। उनके साथ समय बिताकर इन्हें लगा कि ये ज़िन्दगी और भी बहुत कुछ कर सकती हैं और उनके कहने पर ही CA की पढाई भी शुरू की। सुजीत ने गीता की हर सम्भव मदद की। मगर नियति को कुछ दूसरी चीज़ मंज़ूर थी। अपने काम के कारण सुजीत को मुंबई से बैंगलोर शिफ्ट होना पड़ा, इन दोनों ने इस दूरी को भी अपने प्यार की मज़बूती से पार करने का मन बना लिया। एक बार सुजीत को सरप्राइज देने के लिए जब ये मुंबई से बैंगलोर पहुंची तो खुद अचम्भित हो गयी। सुजीत एक रोड एक्सीडेंट के कारण अस्पताल में भर्ती थे, जिसके कुछ दिन बाद उनकी मौत हो गयी।

इस समय की कल्पना आप शायद कर सकेंगे कि जिसकी ज़िन्दगी में ख़ुशी एक धुप छांव का खेल खेल रही हो उस लड़की पर क्या बीतेगी, जब जब लगता की ज़िन्दगी एक खूबसूरत मोड़ ले रही है, उस मोड़ पर ठोकर मिलती।

व्हीलचेयर बास्केटबॉल की शुरूआत :-

सारी मुशकिओं के बावजूद भी गीता चौहान ने खुद को समेट कर खड़ा किया। 2012 में सुजीत की मौत के बाद वो 5 साल तक डिप्रेशन में रहीं, और तब एक ऑनलाइन फ्रेंड के ज़रिये उन्हें व्हीलचेयर बास्केटबॉल के बारे में पता चला जो उनकी ज़िन्दगी में नया मोड़ ले कर आया। तब तक वो अपनी रिलायंस मनी की ब्रांच मैनेजर की नौकरी छोड़ कर खुद का बिज़नेस शुरू करने की सोच रह थी।

फिर उन्होनें महाराष्ट्र की ओर से व्हीलचेयर बास्केटबॉल खेलना शुरू किया। उन्होनें पहली बार 2017 में चौथे नेशनल व्हीलचेयर बास्केटबॉल में हिस्सा लिया। 2018 में दूसरी बार पांचवे नेशनल व्हीलचेयर बास्केटबॉल में तमिलनाडु के खिलाफ फाइनल मैच में 12 पॉइंट्स के साथ वो उस टूर्नामेंट की टॉप स्कोरर थी, और जीत के लिए उन्हें गोल्ड मैडल भी मिला था। इसके बाद 2019 के छठे नेशनल व्हीलचेयर बास्केटबॉल में भी इन्होने गोल्ड मैडल जीता है।

गीता ने मार्च 2018 में बैंकॉक, थाईलैंड में एशियन पैरा गेम्स क्वालिफाइंग ट्रायल में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

सिर्फ इतना ही नहीं अपनी खेल का लोहा मनवाते हुए उन्होनें अपने लिए भारतीय महिला व्हीलचेयर बास्केटबॉल टीम में जगह बनाई है जो 2019 नवंबर AOZ चैंपियनशिप में हिस्सा लेगी।

AOZ चैंपियनशिप 2020 में जापान के टोक्यो में होने वाले पैरालिम्पिक्स का क्वालीफ़ायर टूर्नामेंट है।

अपनी खेल के दम पर वो अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगतिओं में भारत का प्रतिनिधत्व कर चुकी हैं। गीताअब व्हीलचेयर टेनिस में भी हाथ आज़मा रही हैं।

इन्होनें चेन्नई में आयोजित ओपन नेशनल व्हीलचेयर टेनिस चैम्पियनशिप 2018 में युगल में उपविजेता का खिताब जीता है। बैंगलोर में आयोजित नेशनल व्हीलचेयर टेनिस चैम्पियनशिप 2018 में भाग लिया है। इसके साथ ही ये मैराथन रनर भी रह चुकी हैं इन्होनें वलसाड में आयोजित व्हीलचेयर मैराथन में 10 KM की दुरी 40 मिनट 3 सेकंड में पूरी की है।

गीता चौहान की ज़िन्दगी प्रेरणा की जीतीजागती मिसाल है, जिसकी कल्पना कर भी लिया जाए तो उसे जीना हर किसी के बस की बात नहीं।

बाबा गरीब नाथ दिव्यांग (विकलांग) सह-जन सेवा संस्थान

कलमबाग चौक मुजफ्फरपुर द्वारा संचालित मूकबधिर आवासीय विध्यालय में निःशुल्क शिक्षण प्रशिक्षण, व्यवसायिक प्रशिक्षण, स्पीच थेरापी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, कम्प्यूटर, पेन्टिंग, खेलकूद एवं भोजन आवास वर्ग 1 से 8 तक की पढाई निःशुल्क दी जाती है। अनुभवी एवं विकलांगता के क्षेत्र में प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिका द्वारा एवं आधुनिक मशीन द्वारा शिक्षित किया जाता है। मूकबधिर लड़का एवं लडकियों के लिए अलग-अलग छात्रावास की सुविधा है।

विकलांग युवा व्यक्तियो के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किया जा रहा है।

- विकलांग युवा व्यक्तियो के लिए विवाह ब्युरो केन्द्र संचालित किया जा रहा है।
- विकलांग व्यक्तियो के लिए परामर्श केन्द्र संचालित किया जा रहा है।
- विकलांग बच्चों के लिए मानसिक विध्यालय संचालित किया जा रहा है।

यह एक सामाजिक संस्था है जो विकलांगो में जीवन के प्रति आशा उत्साह और संघर्ष की चेतना जगाकर उन्हें एक योग्य कर्मठ नागरिक बनाने का प्रशिक्षण देती है। संस्था यह नहीं मानती की विकलांगता किसी प्रकार की ईश्वरीय अभिशाप या दंड है। हम सभी नागरिको का दायित्व बनता है की ऐसे विकलांग व्यक्तियो का सहयोग करे।

अतः आप सभी सम्मानित नागरिको से अनुरोध है की इस तरह आपके आस-पास मूक बधिर विकलांग बच्चे हो तो इस संस्था में भेजकर पूण्य के भागी बने।

नामांकन जारी है। स्पीचथेरापी की सुविधा उपलब्ध है।

मुनिल कुमार (स्पीच थेरापिस्ट)
श्रवण विशेषज्ञ
डी.एच.एल.एस.

डी.चौधरी
सचिव - ९३३४४९८६३०

+++++

जनगणना 2011 के अनुसार दिव्यांग (विकलांग) व्यक्तियों की अक्षमता की संख्या

क्रमांक	राज्य	जनगणना 2011 के अनुसार कुल विकलांग जनसंख्या	विकलांग व्यक्तियों की संख्या (विकलांगता वार)							
a	b	c	d	e	f	g	h	i	j	k
		Total	**Seeing**	**Hearing**	**Speech**	**Movement**	**Mental Retardatuin**	**Mental illness**	**Any Other**	**Multiple Disability**
1	Andhra Pradesh	2266607	398144	334292	219543	538934	132380	43169	409775	190370
2	Arunachal Pradesh	26734	5652	8127	1538	3235	1264	631	3878	2409
3	Assam	480065	80553	101577	39750	76007	26374	18819	87461	49524
4	Bihar	2331009	549080	572163	170845	369577	892571	37521	431728	110844
5	Chhattisgarh	624937	111169	92315	28262	190328	33171	20832	76903	71957
6	Delhi	234682	30124	34499	15094	67383	16338	10046	37013	24385
7	Goa	33012	4964	5347	5272	5578	1817	1675	5784	2575
8	Gujarat	1092302	214150	190675	60332	245879	66393	42037	197725	75111
9	Haryana	546374	82702	115527	21787	116026	30070	16191	116821	47250
10	Himachal Pradesh	155316	26076	26700	8278	32550	8986	5166	29024	18536
11	J&K	361153	66448	74096	18681	58137	16724	15669	66957	44441
12	Jharkhand	769980	180721	165861	46684	147892	37458	20157	112372	58835
13	Karnataka	1324205	264170	235691	90741	271982	93974	20913	246721	100013
14	Kerala	761843	115513	105366	41346	171630	65709	66915	96131	99233
15	Madhya Pradesh	1551931	270751	267361	69324	404738	77803	39513	295035	127406
16	Mahatashtra	2963392	574052	473271	473610	548418	160209	58753	510736	164343
17	Manipur	54110	18226	10984	2504	5093	4506	1405	8050	3342
18	Mizoram	15160	2035	3354	1163	1976	1585	1050	1914	2083
19	Meghalaya	44317	6980	12353	2707	5312	2332	2340	8717	3576
20	Nagaland	29631	4150	8940	2294	3828	1250	995	4838	3336
21	Odisha	1244402	263799	237858	68517	259899	72399	42837	172881	126212
22	Punjab	654063	82199	146696	24549	130044	45070	21925	165607	37973
23	Rajasthan	1563694	314618	218873	69484	427364	81389	41047	199696	211223
24	Sikkim	18187	2772	5343	1577	2067	516	513	2459	2940
25	Tamil Nadu	1179963	127405	220241	80077	287241	100847	32964	238392	92796
26	Tripura	64346	10828	11695	4567	11707	4307	2909	11825	6508
27	Uttar Pradesh	4157514	763988	1027835	266586	677713	181342	76603	946436	217011
28	Uttarakhand	185272	29107	37681	12348	36996	11450	6443	30723	20524
29	West Bengal	2017406	424473	315192	147336	322945	136523	71515	402921	196501
30	A&N Islands	6660	1084	1219	531	1593	294	364	838	737
31	Chandigarh	14796	1774	2475	961	3815	1090	756	2583	1342
32	Daman & Diu	2196	382	309	149	620	176	89	264	207
33	D&N Haveli	3294	429	715	201	682	180	115	483	489
34	Lakshadweep	1615	337	224	73	361	112	96	183	229
35	Puducherry	30189	3608	6152	1824	9054	2335	853	4137	2226
	TOTAL	**26810557**	**5032463**	**5071007**	**1998535**	**5436604**	**1505624**	**722826**	**4927011**	**2116487**

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
(N.G.O.)
संचालित
ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर
मानसिक दिव्यांग बच्चों के
लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था
शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे
सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365